ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

वैश्वीकरण और समाज

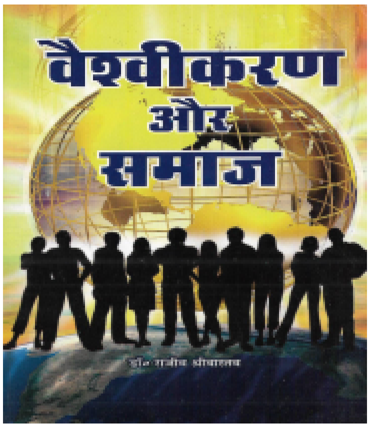

लेखक : डॉ0 राजीव श्रीवास्तव
(एम0फिल0,पी–एच0डी0)
विभागाध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय बॉसडीह, बलिया–उ0प्र0
प्रकाशक : वैभव लक्ष्मी प्रकाशन, कमच्छा, वाराणसी–उ0प्र0
मूल्य : 200/– रूपया
ISBN NO. : 978–93–80301–62–4
प्रथम प्रकाशन : 2012–13
पृष्ठ संख्या : 396+चित्र+सारणी+समर्पण+आमुख+अनुक्रमणिका
बाइडिंग : किताब रूप

वैश्वीकरण और समाज के परिप्रेक्ष्य में मानव समाज के लिए वैश्वीकरण सर्वाधिक अविव्यंजना है।इससे सम्बन्धित विभिन्न एवं व्यापक विषय क्षेत्र है, जो किसी भी ज्ञान शाखा से अछूता नही रह गया है। इसका कारण है उपदेयता, किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण है उससे उत्पन्न समस्यायें। शीतयुद्ध के पश्चात् विश्व का विभिन्न क्षेत्र का स्वरूप बदल गया। इस बदली हुई परिस्थिति में समस्त राष्ट्रों को एक साथ पिरोये जाने की कोशिश हो रही है। विकासशील अथवा अविकसित राष्ट्रों के समस्याओं के निदान के लिए वैश्वीकरण, एक संजीवनी स्वरूप औषधि का कार्य कर रहा है। साथ ही, यह भी देखा जाय तो वैश्वीकरण, औद्योगिकरण एवं अन्य सामाजिक परिवेश सामाजिक परिवर्तन को दिशा एवं गति हैं। राष्ट्र एवं समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीति के परिदृश्य के साथ ही शासकीय नीतियों का प्रभाव समाज पर स्पस्ट देखा जा सकता हैं। इस तरह बदलते परिवेश में डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव ने वैश्वीकरण की विश्व एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों के परिवर्तित भूमिका एवं परिस्थितियों के अध्ययन के पश्चात् गुणात्मक एवं शोधात्मक नवीन तथ्यों के साथ पुस्तक क्लेवर में समृद्ध बनाया हैं।

प्रस्तुत पुस्तक को शोध आधारित एवं वैज्ञानिक स्वरूप में प्रस्तुत करते हुए 21 विभिन्न अध्यायों में लिखी गयी हैं।

पहला अध्याय–वैश्वीकरण : समाजशास्त्रीय परिदृश्य, दूसरा अध्याय–वैश्वीकरण : वर्तमान परिदृश्य, तिसरा अध्याय–वैश्वीकरण : ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, कृषि, आर्थिक एवं संगीत परिदृश्य, चौथा अध्याय–वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण, पॉचवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं पूंजीवाद, छठॉ अध्याय–वैश्वीकरण : सूचना एवं जनसंचार तकनीकी, सातवॉ अध्याय–वैश्वीकरण के अभिकरण : बहुराष्ट्रीय निगम, विश्व बैंक, आई0 एम0 एम0 "अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष", आठवॉ अध्याय–वैश्वीकरण और राष्ट्र–राज्य, नवॉ अध्याय–बाजार एवं भारतीय अर्थव्यवस्था, दसवॉ अध्याय–वैश्वीकरण : संस्कृति एवं सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, ग्यारहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं उपभोक्ता, बारहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं व्यक्तिवाद, तेरहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं मानवाधिकार, चौदहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं गरीबी, पन्द्रहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद, सोलहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं नृजातीयता, सत्रहवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं वैश्विक पर्यटन, अठाहरवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं जन–संस्कृतिकरण, उन्नीसवॉ अध्याय–वैश्वीकरण के लाभ एवं हानियॉ, बीसवॉ अध्याय–वैश्वीकरण तथा भारतीय अनुभव एवं अन्तिम इक्कीसवॉ अध्याय–वैश्वीकरण एवं पर्यावरण हैं।

लेखक डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव ने विश्व के विभिन्न देशों पर विभिन्न क्षेत्रों में वैश्वीकरण के पड़ने वाले प्रभाव का स्पस्ट उल्लेख किया हैं और महत्वपूर्ण तथ्यों को सम्मिलित करते हुए उपयोगी एवं रोचक बनाने का सफल अभिनव प्रयास किया हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुस्तक का अकादमिक क्लेवर समृद्ध एवं सुव्यवस्थित हैं। यह पुस्तक गहन अध्ययन एवं अनुसंधान के साथ ही सुधार व विकास के लिए नीति निर्माण में भी बेहद उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

समीक्षक- प्रो0 सुधाकर प्रसाद तिवारी
प्राचार्य
श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीगंज, बलिया (उ0 प्र0),भारत
एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय,
बलिया (उ0 प्र0), भारत